

डॉ. गैरी येट्स, पुस्तक 12, सत्र 19, मीका, परिचय और संरचना

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ॰ गैरी येट्स की पुस्तक 12 पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला है। यह व्याख्यान 19, मीका परिचय और संरचना है।

छोटे भविष्यवक्ताओं के अध्ययन में हम उस बिंदु पर पहुंच गए हैं जहां हम असीरियाई भविष्यवक्ताओं में से अंतिम पर विचार करने जा रहे हैं।

याद रखें कि 12 की पुस्तक में, उनकी सेवकाई की अवधि तीन से 400 वर्षों तक फैली हुई है। हमारे पास भविष्यवक्ताओं का एक समूह है जिसने असीरियन संकट के दौरान परमेश्वर के लोगों की सेवा की। हमने उत्तरी राज्य के भविष्यवक्ताओं, आमोस, होशे और योना को देखा है।

हमारे पास एक भविष्यवक्ता भी है जो संकट के इस समय में यहूदा की सेवा करता है, उन्हें अशूरियों के हाथों दक्षिणी राज्य पर आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी देता है। फिर हमारे पास बेबीलोन के संकट के दौरान बेबीलोन के भविष्यवक्ताओं का एक समूह है, और फिर भविष्यवक्ताओं का एक समूह है जिसे परमेश्वर लोगों के देश में वापस लौटने के बाद भी उठाता है। मीका का अध्ययन शुरू करने से पहले, मैं योना की पुस्तक और एक दिलचस्प धार्मिक मुद्दे पर कुछ समापन विचारों के साथ शुरुआत करना चाहूंगा जिसे हम अपने पिछले सत्र में पूरी तरह से संबोधित नहीं कर पाए थे।

लेकिन योना के चौथे अध्याय में, याद रखें कि हमारे पास वास्तव में पुस्तक का मुख्य बिंदु है। यह है कि योना ने अशूरियों को परमेश्वर द्वारा दिए गए उद्धार पर कैसे प्रतिक्रिया दी? पुस्तक का एक बड़ा हिस्सा योना के धन्यवाद के बीच का अंतर है जब परमेश्वर उसे बचाता है, भले ही वह मृत्यु से अयोग्य था और योना की प्रतिक्रिया जब परमेश्वर एक पूरे शहर को बचाता है जो इसके योग्य नहीं था जब वे मृत्यु और विनाश का सामना कर रहे थे। अपने हालिया थियोलॉजी ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट में, डॉ. मोबर्ली ने इस मुद्दे को संबोधित किया है कि योना को ईश्वरीय दया से समस्या क्यों है। याद रखें कि योना के चौथे अध्याय, श्लोक दो में, योना नीनवे क्यों नहीं जाना चाहता था? यही कारण है कि मैंने तर्जुमा को भागने की जल्दी की, क्योंकि मैं जानता था कि आप एक अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर हैं, जो क्रोध करने में धीमे और दृढ़ प्रेम से भरपूर और विपत्ति से दूर रहने वाले हैं।

योना ने परमेश्वर पर आपत्ति जताई, जो नीनवे के लोगों पर वही दया और करुणा दिखा रहा था जो उसने इस्राएल के लोगों पर दिखाई थी। डॉ. मोबर्ली ने सवाल उठाया, योना को नीनवे के लोगों पर परमेश्वर की दया से परेशानी क्यों है? संभवतः, हम जो देख रहे हैं वह एक साधारण विचार है कि योना स्वार्थी है और केवल अपनी जरूरतों के बारे में चिंतित है। उस अध्याय में, हम एक चिड़चिड़ा, नाराज़, स्वार्थी भविष्यवक्ता को देखते हैं, लेकिन वास्तव में, मुद्दा उससे कहीं अधिक गहरा लगता है।

कुछ लोगों ने तर्क दिया है, और योना को देखने वाले कुछ धर्मशास्त्रियों ने तर्क दिया है कि योना को अधूरी भविष्यवाणी या आकस्मिक भविष्यवाणी के विचार से समस्या है। अगर योना जाता है और भविष्यवाणी करता है कि निनवे नष्ट होने जा रहा है, तो अगर ऐसा नहीं होता है, तो यह उसके बल्लेबाजी औसत को गड़बड़ कर देगा। याद रखें कि ईश्वर के एक सच्चे भविष्यवक्ता को हमेशा उन चीजों में सटीक होना चाहिए जो उन्होंने भविष्यवाणी की थी।

शायद योना भविष्यवाणी की आकस्मिकता से जूझ रहा है। लेकिन मुझे लगता है कि यह वास्तव में इसका एक अच्छा स्पष्टीकरण नहीं है क्योंकि पूरे पुराने नियम में इस विचार की समझ है कि भविष्यवक्ता केवल उन चीजों की छाया की घोषणा कर रहे हैं जो तब तक घटित होंगी जब तक कि भविष्यवाणी के प्रति उस तरह की प्रतिक्रिया न हो जिसकी परमेश्वर तलाश कर रहा है। यहां तक कि जब एक पूर्ण, कुछ हद तक बिना शर्त वाला कथन होता है, 40 दिन और निनवे नष्ट हो जाएगा, तो पूरे इज़राइल के इतिहास में भविष्यवाणी की एक समझ प्रतीत होती है कि यदि पश्चाताप है, तो हमेशा परमेश्वर के नरम पड़ने और न्याय न भेजने की संभावना है।

इसलिए, मुझे नहीं लगता कि यह सिर्फ योना के स्वार्थी होने का मामला है। यह इसका एक हिस्सा हो सकता है। मुझे नहीं लगता कि यह योना के आकस्मिक या अधूरी भविष्यवाणियों के विचार से जूझने या योना को झूठे भविष्यवक्ता के रूप में लेबल किए जाने का मामला है।

दूसरों ने कहा है कि योना को इस तथ्य से परेशानी है कि दया और परमेश्वर द्वारा लोगों पर दया और करुणा दिखाने से लोगों में परमेश्वर की कृपा पर भरोसा करने और उस तरह का नैतिक जीवन न जीने की प्रेरणा पैदा होती है जैसा उन्हें जीना चाहिए। यह लगभग रोमियों के विचार जैसा है, क्या हमें पाप करते रहना चाहिए ताकि अनुग्रह प्रचुर मात्रा में हो? यदि परमेश्वर बहुत दयालु है, तो लोगों के पास वास्तव में नैतिक, सभ्य और धार्मिक जीवन जीने की क्या प्रेरणा है? यदि हम परमेश्वर की दया, करुणा और कृपा का बहुत अधिक समर्थन करते हैं, तो यह नैतिक प्रभाव को नष्ट करने वाला बन जाएगा। भविष्यवक्ता मलाकी को मलाकी अध्याय 3, श्लोक 14 से 18 में इस मुद्दे को संबोधित करना होगा।

वहाँ के लोगों के साथ मलाकी की बातचीत के अनुसार, जो सही है या जो न्यायपूर्ण है, उसे करने से क्या लाभ है? परमेश्वर लोगों को उनकी धार्मिकता या अधार्मिकता के आधार पर पुरस्कृत नहीं करता। तो, क्या यही मुद्दा है? मुझे लगता है कि जब हम योना अध्याय 4 पद 2 को देखते हैं, तो मुख्य मुद्दा जो योना के दिमाग में इस एजेंडे को आगे बढ़ाता हुआ प्रतीत होता है, वह यह है कि इस पुस्तक में, जैसा कि हम पहले ही बात कर चुके हैं, परमेश्वर की दया और परमेश्वर के न्याय के बीच द्विविधा है। यदि परमेश्वर निनवे के लोगों पर दया दिखाता है जो इस्राएलियों पर अत्याचार करते रहे हैं, तो इस्राएल के लोग और परमेश्वर के लोग कैसे जान सकते हैं कि वे चीजों को सही करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं? एक अर्थ में, योना एक महत्वपूर्ण मुद्दा उठा रहा है।

कॉफ़मैन कहते हैं कि योना ईश्वर पर इसलिए नाराज़ नहीं है क्योंकि वह एक संकीर्ण सोच वाला कट्टरपंथी है, बल्कि इसलिए क्योंकि वह ईश्वरीय न्याय का समर्थक है। अब जबकि ईश्वर ने निनवे

के लोगों को बख्श दिया है और अब जबकि ईश्वर ने उन पर दया दिखाई है, तो ईश्वर के लोग कैसे जान सकते हैं कि वे ईश्वर के न्याय पर भरोसा कर सकते हैं? योना यह भी जानता है कि जब वह नीनवे जाएगा और अगर ईश्वर अशूरियों और नीनवे के लोगों को बख्श देगा, तो इसका इसराइल के लोगों के भविष्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। अगर योना की किताब निर्वासन के समय के बाद लिखी और एक साथ रखी जाती है और निर्वासन के समय के बाद अपने अंतिम रूप में आती है, तो संपादक और इसके अंतिम संयोजन के लिए जिम्मेदार लोग पहले से ही जानते हैं कि वास्तव में क्या हुआ था।

तो, योना की किताब के अंत में एक गंभीर नैतिक मुद्दा उठाया गया है। योना सिर्फ एक चिड़चिड़ा और नाराज़ भविष्यवक्ता नहीं है, वह वास्तव में एक बड़ा सवाल उठा रहा है। वह एक ऐसा सवाल उठा रहा है जो नैतिकता की कक्षा या दर्शनशास्त्र की कक्षा या धर्मशास्त्र की कक्षा में संबोधित करने के लिए हमारे लिए गंभीर और महत्वपूर्ण होगा।

इस बात को ध्यान में रखते हुए, यह विडंबना है कि जब योना इस चिंता को उठाता है, तो पुस्तक में जिस तरह से उसे चित्रित किया गया है, वह केवल अपनी जरूरतों के बारे में चिंतित है। वह चिड़चिड़ा है; वह मुंह फुलाए हुए है, वह बचकाना है, और वह 120,000 लोगों के कल्याण और भलाई के बजाय अपने खुद के सनबर्न के बारे में अधिक चिंतित है। यदि योना इस तरह के गंभीर मुद्दे को उठा रहा है, तो उसे इस तरह के व्यंग्यात्मक तरीके से क्यों चित्रित किया गया है? मुझे लगता है कि इससे जो उत्तर निकलता है, वह यह है कि ईश्वर योना से कहना चाहता है, और मुझे लगता है कि अंततः पुस्तक के पाठकों से, कि भले ही योना एक गंभीर मुद्दा उठा रहा है, जब ईश्वर की दया की बात आती है, तो ईश्वर दया दिखाने के लिए तैयार है, भले ही इसका मतलब यह हो कि कुछ समय के लिए ईश्वरीय न्याय को अलग रखना पड़े।

हालाँकि योना एक महत्वपूर्ण मुद्दा और एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठा रहा है, लेकिन परमेश्वर की दया और नीनवे के लोगों के लिए उसकी चिंता और देखभाल के मुद्दे की तुलना में, उस चिंता को दूसरे स्थान पर रखा जाना चाहिए। इसलिए, मुझे लगता है कि योना की पुस्तक से हमें जो अंतिम उद्देश्य निकालना चाहिए, वह यह है कि यह पुस्तक हम पर गहराई से प्रभाव डालनी चाहिए। मुझे लगता है कि इसे पढ़ते समय हमें इस पर विचार करने के लिए समय निकालना चाहिए, यह परमेश्वर की दया की गहराई और व्यापकता है।

पिछले सत्र के समापन पर हमने इस तथ्य पर चर्चा की कि योना की पुस्तक एक अलंकारिक प्रश्न के साथ समाप्त होती है। क्या मुझे नीनवे के बारे में चिंतित नहीं होना चाहिए? क्या मुझे इस महान शहर पर दया नहीं करनी चाहिए जिसमें 120,000 से अधिक लोग रहते हैं? योना, यदि आप इसकी भी परवाह नहीं कर सकते, तो क्या आप कम से कम जानवरों की परवाह कर सकते हैं? यह इस अलंकारिक प्रश्न के साथ समाप्त होता है। हमें योना का उत्तर नहीं मिलता है।

क्या वह कभी ईश्वर के दृष्टिकोण से सहमत हुआ? लेकिन इस पुस्तक के लिए महत्वपूर्ण बात यह है कि क्या हम ईश्वर के दृष्टिकोण से सहमत होंगे या हम योना के दृष्टिकोण को साझा करेंगे? इसलिए, मैं बस हमें अंतिम रूप से याद दिलाना चाहता हूँ कि यह पुस्तक हमें ईश्वर की दया की गहराई और व्यापकता से प्रभावित करती है। यह हमें पुराने नियम के ईश्वर के बारे में सोचने के

लिए कुछ देता है जो पुराने नियम में ईश्वर के बारे में अक्सर जिस तरह से सोचा जाता है उससे बहुत अलग है, खासकर भविष्यवक्ताओं में। विरचेल नाम के एक लेखक ने यह कहते हुए सोचा कि हम इस बात पर कैसे विचार करते हैं कि पुस्तक हमारे लिए क्या मायने रखती है।

योना अपनी छायादार सीट पर चला गया और ईश्वर के उसके सोचने के तरीके को समझने का इंतज़ार करने लगा। ईश्वर अभी भी अपने आरामदायक घरों में रहने वाले जोनास के समूह के उसके सोचने के तरीके को समझने का इंतज़ार कर रहा है। इसलिए, हम योना को देखकर हँस सकते हैं जब हम देखते हैं कि उसका किस तरह से मजाक उड़ाया गया है और उसे किस तरह से व्यंग्यात्मक तरीके से पेश किया गया है।

वह प्रति-भविष्यवक्ता है। भगवान द्वारा किसी पर दया दिखाने के कारण मरना उसका बचकाना काम लगता है। लेकिन किस तरह से हमारे मूल्य और हमारी प्राथमिकताएँ शायद उसी तरह के स्वार्थ को दर्शाती हैं? हमें भगवान की दया मिली है।

हमें इसे दूसरों तक भी पहुंचाना चाहिए। जब हम योना को समाप्त करते हैं और ईश्वर की दया की व्यापकता के बारे में सोचते हैं, तो मैं चाहता हूँ कि हम इस तथ्य से अवगत हों कि मुझे लगता है कि हममें से कई लोगों में या तो कुछ खास व्यक्तियों या लोगों के समूहों के इर्द-गिर्द एक घेरा बनाने की प्रवृत्ति होती है। हम सोचते हैं कि ऐसे लोग हैं जो घेरे के अंदर हैं जो या तो ईश्वर की दया या करुणा के दायरे में हैं या वे लोग हैं जो ईश्वर की दया या करुणा के वैध पात्र हैं, लेकिन हम लोगों को इसके बाहर रखते हैं।

अगर कोई ऐसा था जो घेरे से बाहर था, तो शायद वे नीनवे के लोग थे, उनकी हिंसा और इस्राएल के लोगों के साथ उनके द्वारा किए गए कामों के कारण। लेकिन नए नियम में तरसुस के शाऊल के बारे में क्या? परमेश्वर ने एक आतंकवादी को बचाया जो उसका सबसे बड़ा दुश्मन था। क्या हम घेरे से बाहर उन लोगों को रखते हैं जो हमसे अलग हैं और जिनके बारे में हमारा मानना है कि वे परमेश्वर की कृपा के योग्य नहीं हैं? योना हमें उन बातों के बारे में सोचने के लिए कहता है।

क्या हम विश्वासियों के रूप में अल-कायदा के सदस्यों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं और ईश्वर से उनके हृदयों को बदलने के लिए कह सकते हैं? जब ओसामा बिन लादेन जीवित था, तो क्या आपने, एक ईसाई के रूप में, उसके लिए कभी प्रार्थना की थी, और आपने किसके लिए प्रार्थना की थी? क्या ऐसे लोग हैं जो बाल उत्पीड़न करने वाले या बलात्कारी हैं या मृत्युदंड की सजा पाए हुए लोग हैं, या ऐसे लोग हैं जो ईसाई धर्म के अनुरूप नहीं हैं और जो पूरी तरह से अलग राजनीतिक विचारधारा रखते हैं? क्या हम मानते हैं कि वे लोग ईश्वर की दया के दायरे से बाहर हैं? योना ने निश्चित रूप से सोचा था कि नीनवे के लोग थे, और मुझे लगता है कि हमारे पास भी ऐसा करने की प्रवृत्ति है। मैं इसे यहीं समाप्त करूँगा। रसेल मूर ने कुछ साल पहले एक ब्लॉग लिखा था और वह हमें ईश्वर की कृपा की शक्ति की याद दिलाता है जो उन लोगों को बदल सकती है जिन्हें हम अक्सर अपरिवर्तनीय या शायद ईश्वर की दया के अयोग्य मानते हैं।

और वह यह कहते हैं: ईसाई होने के नाते, हमें इस तथ्य पर विचार करने की आवश्यकता है कि अगला बिली ग्राहम इस समय किसी बिरादरी के घर में नशे में धुत होकर बेहोश हो सकता है।

अगला जोनाथन एडवर्ड्स अपनी कार पर डार्विन फिश बम्पर स्टिकर के साथ आपके सामने गाड़ी चला रहा हो सकता है। अगला स्पर्जन अभी समलैंगिक अभिमान मार्च के लिए पोस्टर बना रहा हो सकता है या एक उत्साही LGBT अधिवक्ता हो सकता है।

अगली मदर टेरेसा शायद अभी गर्भपात क्लिनिक का प्रबंधन कर रही हों। ईश्वर में बदलाव और रूपांतरण की शक्ति है। उनकी कृपा, उनकी करुणा और उनके प्रेम ने हमें बदल दिया है, और ईश्वर ऐसा अपने सबसे बुरे शत्रुओं या उन लोगों के साथ भी कर सकते हैं, जो हमारे मन में ईश्वर की करुणा के दायरे से बाहर हैं।

और इसलिए, मैं योना की पुस्तक को इसलिए पसंद करता हूँ क्योंकि यह हमें परमेश्वर की व्यापकता, गहराई और दया की याद दिलाती है। मैंने इसे अपने जीवन में अनुभव किया है। जब मैं अपने पापों और स्वार्थ और भ्रष्टाचार को देखता हूँ तो मुझे पता चलता है कि परमेश्वर क्षमा करने वाला परमेश्वर है।

और एक ईसाई के रूप में, इस तथ्य के प्रकाश में कि मुझे यह प्राप्त हुआ है, मैं इसे अन्य लोगों के साथ साझा करना चाहता हूँ। तो यह एक महत्वपूर्ण अनुप्रयोग है, मुझे लगता है, योना की पुस्तक पर अंतिम चिंतन में। तो अब मैं गियर बदलना चाहता हूँ और मैं असीरियन भविष्यद्वक्ताओं में से अंतिम, भविष्यद्वक्ता मीका को देखना शुरू करना चाहता हूँ, जो दक्षिणी राज्य में सेवकाई करता है।

मीका की आरंभिक आयत में, हम ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और एक उपरिलेख देखते हैं जो हमें उसकी सेवकाई के समय और तिथि के बारे में बताता है। और यह कहता है, प्रभु का वचन जो मोरेशेत के मीका के पास आया, परमेश्वर ने उसे यरूशलेम के बाहर मोरेशेत गत के इस छोटे से गाँव से बुलाया और उसे एक भविष्यवक्ता और प्रवक्ता बनने के लिए बुलाया। हम देखते हैं कि परमेश्वर इन व्यक्तियों को सभी प्रकार की विभिन्न पृष्ठभूमियों से भविष्यवक्ता के रूप में उठाता है।

यह एक दिलचस्प अवलोकन है। लेकिन वह यहूदा के राजाओं योताम, आहाज और हिजकिय्याह के दिनों में एक भविष्यवक्ता था, जिसने सामरिया और यरूशलेम के बारे में देखा था। इसलिए, वह तीन राजाओं के शासनकाल के दौरान यहूदा के दक्षिणी राज्य का एक भविष्यवक्ता था।

योताम, जो 750 या 740 से 732 तक शासन करता है। आहाज, जो 735 से 715 तक शासन करता है। यहाँ इन पिताओं और पुत्रों के शासनकाल कई बार एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं।

फिर 715 से 686 तक हिजकिय्याह का शासन था। तो, इसका मतलब यह है कि मीका इस असीरियन संकट के दौरान यहूदा की सेवा करता है। इसका यह भी मतलब है कि उसे यहूदा के सबसे दुष्ट राजाओं में से एक, राजा आहाज के शासनकाल के दौरान और यहूदा के सबसे धर्मी राजाओं में से एक, उसके बेटे हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान भी सेवा करने का अवसर मिला।

कभी-कभी, पुराने नियम में दोनों दिशाओं में पिता और पुत्रों के बीच अंतर देखना दिलचस्प होता है। मीका उन भविष्यवक्ताओं का समकालीन है जिनका हमने उत्तरी राज्य में अध्ययन किया है। आमोस और होशे उत्तर में लोगों को असीरियन संकट के बारे में उपदेश दे रहे हैं।

मीका उन लोगों को उपदेश दे रहे हैं जो दक्षिण में हैं। मीका दक्षिण में भविष्यवक्ता यशायाह के समकालीन हैं। और कई मायनों में उनकी सेवकाई एक दूसरे के साथ-साथ चल रही है।

और हम कुछ ऐसे तरीकों पर गौर करेंगे जिनसे उनकी सेवकाई और उनके संदेश एक दूसरे के पूरक और समानांतर हैं। इसलिए, हम पहले ही असीरियन संकट की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर गौर कर चुके हैं, और मैं उस सब पर चर्चा नहीं करने जा रहा हूँ। लेकिन मैं कुछ खास तरीकों पर बात करना चाहता हूँ कि इस संकट ने यहूदा के दक्षिणी राज्य को कैसे प्रभावित किया और आखिरकार यह सेवकाई और भविष्यवक्ता मीका के संदेश को कैसे प्रभावित करता है।

याद रखें कि असीरियन संकट की शुरुआत आठवीं शताब्दी में इज़राइल में तिग्लथ-पिलेसर तृतीय के उदय के साथ हुई थी। वह 745 ईसा पूर्व में सिंहासन पर बैठा। उसने असीरिया को एक राज्य के रूप में फिर से सक्रिय किया।

वह उनकी सेना, उनके साम्राज्यवादी इरादों और इच्छाओं को फिर से सक्रिय कर रहा है। और इसलिए वह अपना ध्यान पश्चिम और सीरिया-फिलिस्तीन के देशों की ओर मोड़ने जा रहा है। और विशेष रूप से बाइबिल के संदर्भ में, दिलचस्पी इस बात पर है कि इसका इज़राइल और यहूदा पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

पॉल गिलक्रिस्ट का कथन याद रखें: यह इजरायल का धर्मत्याग था जो असीरियन साम्राज्यवाद का उत्प्रेरक था। और इसलिए जैसे-जैसे यह उत्तरी राज्य को प्रभावित करना शुरू करता है, इसका दक्षिणी राज्य पर भी प्रभाव पड़ने वाला है। 734-732 के वर्षों में हुई एक महत्वपूर्ण घटना सीरो-एप्रैमाइट युद्ध कहलाती है।

मैं बस इसके बारे में संक्षेप में बात करना चाहता हूँ। इज़राइल और सीरिया के राजा, जो अपने इतिहास के दौरान लंबे समय तक दुश्मन रहे थे, असीरियन संकट को देख रहे हैं, तिग्लथ-पिलेसर की सेना की ताकत और पराक्रम को देख रहे हैं। और वे एक निर्णय लेते हैं, और यह एक बहुत ही समझने योग्य सैन्य और राजनीतिक निर्णय है, कि अगर सीरिया और फिलिस्तीन के राजा, या अगर वे कभी इस संकट से बचने जा रहे हैं, तो उन्हें एक साथ मिलकर गठबंधन बनाने की आवश्यकता होगी।

और इसलिए पेकाह, इस्राएल का राजा, रसीन, सीरिया या दमिश्क का राजा, वे एक गठबंधन बनाने जा रहे हैं। साथ मिलकर, वे अपनी सेनाओं, अपने संसाधनों और अपनी सेना को एक साथ लाने और असीरियन हमले का सामना करने की कोशिश करने जा रहे हैं। जब वे ऐसा करते हैं, तो वे यहूदा, यहूदा के दक्षिणी राज्य को इस गठबंधन और उनके राजा और उनके लोगों और उनके संसाधनों और उनकी सेना में लाने के प्रयास के महत्व को पहचानते हैं।

हालाँकि, आहाज, जब वे उसके पास पहुँचते हैं और उस पर इस गठबंधन में शामिल होने के लिए दबाव डालना शुरू करते हैं, आहाज एक दुष्ट और अधर्मी राजा था, लेकिन वह राजनीतिक रूप से इतना चतुर और सैन्य रूप से समझदार भी था कि उसे पता था कि यह गठबंधन काम नहीं करने वाला था। इस गठबंधन में शामिल होना आत्महत्या के समान था, और इसलिए उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया। इसके परिणामस्वरूप, सीरो-एप्रैमाइट गठबंधन, इस्राएल का राजा और सीरिया का राजा, उनके संसाधन, उनकी सेनाएँ और उनके राष्ट्र यहूदा में काफी बड़े हैं।

वे आहाज को अपने गठबंधन में शामिल करने के प्रयास में यहूदा की भूमि पर आक्रमण करने जा रहे हैं। इस समय आहाज के राज्य और उसके शासन में, भविष्यवक्ता यशायाह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब यह संकट चल रहा था और आहाज इस बारे में सोच रहा था कि हम इसका सामना कैसे करेंगे और मैं इन दो सेनाओं और दो राष्ट्रों के हमले से कैसे निपट सकता हूँ जो मेरी सेनाओं और मेरे संसाधनों से बड़े हैं, तो वह एक दिन यरूशलेम में पानी की आपूर्ति की जाँच करने निकल पड़ा।

वह सभी राजनीतिक विकल्पों को सुलझाने की कोशिश कर रहा है। यशायाह उसके पास आता है और उसे एक उत्साहवर्धक संदेश देता है, इस तथ्य के बावजूद कि आहाज एक दुष्ट राजा रहा है। वह कहता है, आहाज, गठबंधन के बारे में चिंता मत करो।

पेकाह और रेज़िन के बारे में चिंता मत करो। वे दो सुलगती हुई लकड़ियों से ज़्यादा कुछ नहीं हैं। भगवान उन्हें बुझा देने वाले हैं।

यदि आप उस पर भरोसा करेंगे, तो परमेश्वर आपकी रक्षा करेगा। यरूशलेम शहर इस्राएल के राजा का नहीं है। यह सीरिया के राजा का नहीं है।

वे इस आक्रमण में सफल नहीं होंगे। हालाँकि, आहाज का परमेश्वर के साथ कोई रिश्ता नहीं है। उसका परमेश्वर पर भरोसा करने या परमेश्वर के साथ चलने का इतिहास नहीं है, और उसे इस संदेश पर विश्वास करना असंभव लगता है।

मैं भगवान पर कैसे भरोसा कर सकता हूँ जब मेरे पास ये दो शक्तिशाली सेनाएँ हैं जो मुझ पर हमला कर रही हैं? इसलिए यशायाह इसे एक कदम आगे ले जाने जा रहा है और कुछ ऐसा करने जा रहा है जो भगवान अक्सर व्यक्तियों के साथ नहीं करता है। वह आहाज से कहता है, आहाज, मैं तुम्हें बताता हूँ, अगर तुम इस संदेश पर विश्वास नहीं कर सकते, तो भगवान से पूछो, और भगवान तुम्हें एक संकेत देंगे। तुम इसे स्वर्ग जितना ऊँचा बना सकते हो।

आप इसे जितना चाहें उतना बड़ा बना सकते हैं। आप भगवान से जुलाई में बर्फ़बारी करने के लिए कह सकते हैं। भगवान आपको एक पुष्टि संकेत देंगे और आपके लिए इस संदेश को मान्य करेंगे।

यह एक अविश्वसनीय प्रस्ताव है। हालाँकि, आहाज कहता है, मैं परमेश्वर से नहीं पूछूँगा। मैं उसकी परीक्षा नहीं लूँगा।

वह बहुत ही धार्मिक लगता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि वह बस भगवान पर भरोसा नहीं करता। इसके परिणामस्वरूप, यशायाह पलटकर उसे एक संकेत देता है जो न्याय और उद्धार दोनों का मिश्रित संदेश है। आहाज, भगवान पर भरोसा करने के बजाय, कुछ ऐसा करता है जो प्रभु को नाराज़ करता है।

इसके बजाय वह अश्शूर के राजा तिग्लथ-पिलेसर से अपील करता है कि वह आकर उसकी मदद करे। इसलिए अश्शूर के खिलाफ़ गठबंधन में शामिल होने के बजाय, जिसे इस्राएल और दमिश्क के राजा ने शुरू किया और भड़काया, आहाज इसके बजाय अश्शूरियों से अपील करता है कि वे आकर उसकी मदद करें। अश्शूर का राजा ऐसा करने में बहुत खुश है।

जब वह सीरिया और इजरायल द्वारा बनाए गए गठबंधन से निपटने के लिए नीचे आता है, तो वह उन्हें बुरी तरह से हरा देता है। दमिश्क मूल रूप से नष्ट हो गया है। वास्तव में, अपने अस्तित्व के अंतिम दस वर्षों में, इजरायल वास्तव में सामरिया शहर के आसपास एकत्रित एक अवशेष राज्य से अधिक कुछ नहीं बन पाया है।

734 से 732 तक चली इस सीरिया-एप्रैमी लड़ाई में भारी नुकसान हुआ क्योंकि सीरिया और इज़राइल ने यहूदा पर आक्रमण किया। दोनों पक्षों को गंभीर नुकसान हुआ। आहाज परमेश्वर पर भरोसा करने में विफल रहा।

वह यहूदा के सबसे दुष्ट राजाओं में से एक था, लेकिन इस तथ्य के परिणामस्वरूप कि उसने अश्शूरियों का सामना नहीं किया, इस समय यहूदा बच जाएगा। हालाँकि, परमेश्वर में उसके विश्वास की कमी के कारण, यहूदा अब अश्शूरियों का जागीरदार बन गया है। वे अश्शूरियों के राजा के अधीन हैं और उन्हें नियंत्रित और हावी किया जाएगा और उन्हें कर देने के लिए मजबूर किया जाएगा।

आहाज ने अश्शूरियों के सामने पूरी तरह से घुटने टेक दिए। उसने यरूशलेम के मंदिर में अश्शूरियों की पूजा पद्धति को लाया और उसने अश्शूरियों को यह दिखाने के लिए सब कुछ किया कि वह एक सार्थक संधि या सार्थक जागीरदार बनने जा रहा है। वह उनके खिलाफ विद्रोह नहीं करने वाला था।

इसलिए, मीका योताम और आहाज के शासनकाल के दौरान अपनी सेवकाई शुरू कर रहा है और उसे आगे बढ़ा रहा है तथा परमेश्वर के न्याय के बारे में प्रचार कर रहा है जिसे परमेश्वर इस समय यहूदा के विरुद्ध लाने जा रहा है। आहाज स्वयं, कई मायनों में, समस्या का हिस्सा था और उन कारणों का हिस्सा था जिसके कारण परमेश्वर का न्याय आने वाला था। इस समय के दौरान, कुछ वर्षों बाद, सीरो-एप्रैमाइट गठबंधन के बाद और दस वर्षों के भीतर युद्ध होने के बाद, इस्राएल का उत्तरी राज्य गिरने जा रहा है।

725 से 722 में तीन साल की घेराबंदी के बाद सामरिया गिर गया। दक्षिण में एक भविष्यवक्ता के रूप में, मीका ने सामरिया और उत्तरी राज्य के पतन की भविष्यवाणी की। भगवान के एक योद्धा के रूप में नीचे आने की बात करते हुए, पृथ्वी पिघल रही है, वह अपना क्रोध और अपना गुस्सा उंडेलने जा रहा है।

मीका 1 इस बारे में बात करता है और अध्याय 1, श्लोक 5 में कहता है कि यह सब याकूब के अपराध और इस्राएल के घराने के पापों के कारण है। याकूब का अपराध क्या है? क्या यह सामरिया नहीं है? इसलिए, मीका, परमेश्वर द्वारा उसे दी गई भविष्यसूचक अंतर्दृष्टि के माध्यम से, उत्तरी राज्य के पतन को देखता है, लेकिन मीका इस तथ्य के बारे में भी चेतावनी दे रहा है कि एक न्याय होने वाला है जो यहूदा पर भी पड़ने वाला है। मीका अध्याय 1, श्लोक 10 से 16 में, मीका ने अशूर की सेना को यहूदा के राष्ट्र के माध्यम से मार्च करते हुए और यहूदा के लोगों और यहूदा के शहरों और कस्बों को बंदी बनाकर ले जाते हुए चित्रित किया है।

उन शहरों में भी हिंसा, युद्ध, आक्रमण और रक्तपात होगा, जैसा कि उत्तर में हुआ था। संभवतः परमेश्वर द्वारा लाए जाने वाले न्याय की गंभीरता के संदर्भ में न्याय का उनका सबसे प्रसिद्ध संदेश यह है कि मीका ने घोषणा की कि यह न्याय यरूशलेम शहर पर आने वाला है और यरूशलेम शहर नष्ट होने वाला है और मंदिर पर्वत मलबे के ढेर में तब्दील होने वाला है। वह अध्याय 3, श्लोक 12 में भ्रष्ट नेताओं के बारे में बात करते हुए यह कहता है।

इसलिए, तुम्हारे कारण, सियोन को खेत की तरह जोता जाएगा, यरूशलेम खंडहरों का ढेर बन जाएगा, और भवन का पहाड़ जंगल की ऊँचाई बन जाएगा। 722 में उत्तरी राज्य के पतन के बाद, मीका ने दक्षिण के लोगों को चेतावनी दी, देखो, तुम इस न्याय से बच गए हो और बच गए हो जो इस्राएल के घराने पर आया है, लेकिन यह मत सोचो कि तुम जंगल से बाहर हो। वही न्याय जो उत्तर में आया था, दक्षिण में भी आ रहा है।

याद रखें कि यहूदा के सबसे दुष्ट राजाओं में से एक आहाज की मृत्यु के बाद, उसका बेटा हिजकिय्याह उसके बाद राजा बनता है। आहाज के दुष्ट चरित्र के विपरीत, हिजकिय्याह को यहूदा के सबसे धर्मी राजाओं में से एक के रूप में याद किया जाएगा। वास्तव में, राजाओं की पुस्तक में, राजाओं की पुस्तक दाऊद के घराने के तीन राजाओं के बारे में बात करने जा रही है जो कुछ अच्छे गुणों और विशेषताओं में अतुलनीय थे।

सुलैमान, उसकी बुद्धि के मामले में उसके जैसा कोई नहीं था। हिजकिय्याह के साथ, उसके विश्वास के मामले में उसके जैसा कोई नहीं था। यहाँ कुछ ही मिनटों में हम हिजकिय्याह के साथ जो कुछ भी घटित होता हुआ देखते हैं, उसके प्रकाश में हम समझ जाएँगे कि ऐसा क्यों सच है।

दूसरा अतुलनीय राजा है राजा योशियाह। परमेश्वर द्वारा दिए गए आदेशों के प्रति निष्ठा और आज्ञाकारिता के मामले में उसके जैसा कोई नहीं था। लेकिन यह संकट दक्षिण तक पहुँच गया है।

याद रखें, आहाज के अधीन, यहूदा अशूर का एक जागीरदार था। लेकिन जब हिजकिय्याह सिंहासन पर आता है, तो वह निर्णय लेता है और निर्णय लेता है, और इसका उसके शासन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है कि वह उसी तरह अशूरियों के सामने झुकने वाला नहीं है जिस तरह उसके पिता ने किया था। अब, इसका एक हिस्सा सिर्फ राजनीतिक है।

वह अशूरियों के प्रभुत्व में नहीं रहना चाहता। लेकिन इसके पीछे एक अंतर्निहित धार्मिक विश्वास और प्रभु के प्रति वफ़ादारी भी है जो इस विचार की ओर ले जाती है कि वह चाहता है कि परमेश्वर के लोग स्वतंत्र रहें और बुतपरस्त अशूरियों के प्रभाव में न रहें। वर्ष 705 में अशूर के राजा सरगोन की मृत्यु के बाद, हिजकिय्याह को अपना अवसर दिखाई देता है।

वह अवसर देखता है। वह यहूदा पर अशूरियों के नियंत्रण को उखाड़ फेंकने का अवसर तलाश रहा है। जैसा कि अक्सर जागीरदारों के साथ होता था जब अधिपति और राजा की मृत्यु हो जाती थी, हिजकिय्याह ने इसे अशूरियों के खिलाफ विद्रोह करने और कर देना बंद करने के अवसर के रूप में इस्तेमाल किया। फिर से, इसका सकारात्मक पक्ष यह है कि वह लोगों को वापस परमेश्वर के पास लाना चाहता है।

कभी-कभी, इसका नकारात्मक पक्ष यह है कि हिजकिय्याह को सैन्य संसाधनों, अपनी सेना, अपनी राजनीतिक पहल और उस तरह की चीज़ों पर भरोसा करने का प्रलोभन दिया जाएगा। यह संघर्ष हिजकिय्याह के जीवन में इस तथ्य के बावजूद जारी रहेगा कि वह एक ऐसा व्यक्ति था जो अंततः परमेश्वर पर भरोसा करता था। यह निर्णय लेना आसान नहीं था।

अब, अशूरियों के खिलाफ विद्रोह के परिणामस्वरूप कर देने से इनकार करने के परिणामस्वरूप, सरगोन द्वितीय के उत्तराधिकारी अशूर के राजा, सन्हेरीब, उस विद्रोह का जवाब देने जा रहे हैं। आखिरकार, वह हिजकिय्याह को अपने नियंत्रण में लाने की कोशिश करने के लिए यहूदा की भूमि पर आक्रमण करने जा रहा है। अशूर के अभिलेख हमें बताते हैं कि इस आक्रमण में, सन्हेरीब ने यहूदा देश के 46 शहरों पर कब्जा कर लिया, और वह कहता है, मैंने हिजकिय्याह को पिंजरे में बंद पक्षी की तरह फँसा दिया।

यही बात यशायाह के अध्याय 1 में भविष्यवक्ता यशायाह कह रहे हैं। यशायाह के मंत्रालय की शुरुआत और मुख्य भागों के लिए भी यही सेटिंग और संदर्भ है क्योंकि यह यशायाह 1.8 में कहा गया है कि सिय्योन की बेटी को अंगूर के बगीचे में एक झोपड़ी की तरह, ककड़ी के खेत में एक झोपड़ी की तरह, एक घिरे हुए शहर की तरह छोड़ दिया गया है। तो, यहूदा में 46 शहरों पर कब्जा कर लिया गया। यरूशलेम को खड़ा छोड़ दिया गया है लेकिन यहूदा का राज्य इस समय कुछ महत्वपूर्ण संकट में है क्योंकि असीरियन सेना की जबरदस्त ताकत और शक्ति है।

सन्हेरीब और उसकी सेना ने एक महत्वपूर्ण घेराबंदी के बाद आखिरकार जिन 46 शहरों पर विजय प्राप्त की, उनमें से एक लाकीश शहर था, जो यरूशलेम के दक्षिण-पश्चिम में लगभग 25 या 30 मील की दूरी पर स्थित एक शहर था। यह एक महत्वपूर्ण सैन्य छावनी या किला था जिसे यरूशलेम को दुश्मन सेनाओं से बचाने के लिए बनाया गया था जो तट के साथ मार्च करते थे और फिर अंतर्देशीय आक्रमण करते थे। जब लाकीश गिर गया, तो यह सन्हेरीब और असीरियन सेना के लिए एक महत्वपूर्ण सैन्य उपलब्धि थी।

इस आक्रमण के समाप्त होने के बाद, सन्हेरीब अपने महल में वापस गया और उस महल की दीवारों को अलग-अलग चीज़ों को दर्शाते हुए राहत से सजाया क्योंकि उसने लाकीश शहर पर कब्जा कर लिया था। यह एक बड़ी बात थी। लेकिन यह यरूशलेम की सुरक्षा के लिए भी एक

बड़ी बात थी क्योंकि इसका मतलब था कि अब यरूशलेम खुद असीरियन के हमलों के लिए खुला और असुरक्षित था।

शुरू में, सन्हेरीब ने मांग की थी कि हिजकिय्याह दबाव को कम करने और इस आक्रमण को समाप्त करने के तरीके के रूप में उसे श्रद्धांजलि अर्पित करे। हालाँकि, जब हिजकिय्याह श्रद्धांजलि अर्पित करता है, और यहाँ ऐतिहासिक घटनाओं की प्रगति का पता लगाना थोड़ा मुश्किल है, और यह सब क्यों होता है, तो ऐसा लगता है कि सन्हेरीब अपना मन बदल लेता है। कुछ लोगों ने सन्हेरीब के दो अलग-अलग आक्रमण देखे हैं।

दूसरों ने तर्क दिया है कि हिजकिय्याह ने उसे भुगतान करने के लिए श्रद्धांजलि अर्पित की, और फिर सन्हेरीब ने फिर भी आक्रमण करने का फैसला किया। हम कालक्रम की प्रगति को ठीक से नहीं जानते हैं, लेकिन किसी कारण से, सन्हेरीब ने अपना मन बदल लिया और यरूशलेम शहर को भी जीतने का फैसला किया। असीरियन सेना नीचे आ गई।

वे यरूशलेम शहर को घेर रहे हैं। वहाँ 180,000 से ज़्यादा सैनिक हैं। वे यरूशलेम को उसी तरह घेरने जा रहे हैं जैसे उन्होंने लाकीश को घेरा था।

यह एक गंभीर बात है क्योंकि वे शहर को घेर लेंगे। वे उसे भूखा मार देंगे। वे लोगों को उनके भोजन और पानी से वंचित कर देंगे।

फिर, आखिरकार, जब यह सब हो चुका और उन्होंने शहर पर कब्ज़ा कर लिया, तो उन्होंने प्रतिरोध का नेतृत्व करने वाले लोगों को मार डाला या लोगों को बंदी बनाकर ले गए। यरूशलेम बड़ी मुसीबत में था। सन्हेरीब ने अपने सैन्य कमांडर, रबशाकेह को भेजा, और उसने यरूशलेम शहर के पूर्ण बिना शर्त आत्मसमर्पण की मांग की।

अशूर के सेनापति ने यरूशलेम की रक्षा के लिए जिम्मेदार सैनिकों को ताना मारते हुए कहा, देखो, हिजकिय्याह की बात मत सुनो। हमारे खिलाफ इस प्रतिरोध को जारी मत रखो। तुम सफल नहीं होगे।

अंततः, आप भूख से मर जाएंगे। आप नरभक्षण के लिए मजबूर हो जाएंगे। आप ही हैं जिन्हें इस घेराबंदी की भयावहता का अनुभव करना होगा।

हिजकिय्याह को धोखा मत दो। धार्मिक दृष्टि से, वे अहंकारी शेखी बघारते हैं, और कहते हैं, यह मत सोचो कि इस्राएल का परमेश्वर या यरूशलेम का परमेश्वर तुम्हारी रक्षा करने वाला है। इन अन्य लोगों की सभी मूर्तियाँ, चित्र और देवता जिन्हें हमने जीत लिया है, वे हमारा सामना नहीं कर पाए हैं।

वे अशूर के देवताओं की शक्ति के खिलाफ़ खड़े नहीं हुए। सामरिया की छवि ने उनकी रक्षा नहीं की। यह मत सोचो कि तुम्हारा भगवान या तुम्हारी छवि या तुम्हारी मूर्तियाँ भी तुम्हारी रक्षा करने जा रही हैं।

तो, इस दुविधा में, इस संकट में, हिजकिय्याह ऐसी जगह पर है जहाँ उसके पास वास्तव में बहुत अधिक विकल्प नहीं हैं। हिजकिय्याह खुद को भगवान और भगवान की दया और भगवान की मदद पर छोड़ने का विकल्प चुनता है। यह व्यक्ति जो अपने सैन्य सलाहकारों की सलाह का पालन करने और अपनी खुद की सैन्य योजनाओं के झुकाव का पालन करने के बीच संघर्ष कर रहा है, वह निर्णय लेता है, और वह यहाँ एक महान निर्णय लेता है, सही निर्णय जो हम हमेशा ले सकते हैं, पूरी तरह से और पूरी तरह से और विशेष रूप से भगवान पर भरोसा करने का।

हिजकिय्याह यहाँ कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण काम करता है। वह पत्र लेता है, वह कूटनीतिक पत्र जो अशूरियों से आया था जिसमें उसके आत्मसमर्पण की मांग की गई थी, परमेश्वर का उपहास किया गया था, परमेश्वर की निंदा की गई थी, और वह उस पत्र को यरूशलेम के मंदिर में ले जाता है, और वह परमेश्वर से प्रार्थना में अपने दिल की बात कहता है, और वह पत्र को परमेश्वर के सामने रखता है और कहता है, हे प्रभु, मैं चाहता हूँ कि आप इसे पढ़ें। मैं चाहता हूँ कि आप ध्यान दें और ध्यान दें कि अशूर के राजा ने क्या कहा है।

उसने तुम्हारी निंदा की है। उसने कहा है कि उसके देवता तुमसे बड़े हैं। उसने कहा है कि तुम अपने लोगों की रक्षा करने में सक्षम नहीं हो।

प्रभु, हम इस शत्रु से घिरे हुए हैं, और हमें आपकी सहायता की आवश्यकता है। और उस प्रार्थना के जवाब में और विश्वास के इस कार्य के जवाब में, जो कि उसके पिता द्वारा आत्मसमर्पण करने और प्रभु पर भरोसा करने से इनकार करने के तरीके से काफी हद तक विपरीत है, परमेश्वर लोगों को बचाने का वादा करता है। और आहाज के विश्वास की कमी और हिजकिय्याह के भरोसे और विश्वास के बीच का वह अंतर कि परमेश्वर उसे बचाएगा और संकट के बीच में उसे बचाएगा, यशायाह की पुस्तक का एक प्रमुख हिस्सा है।

यशायाह की पुस्तक में दो कथा खंड पाए जाते हैं, यशायाह अध्याय 7 और 8 में, आहाज के विश्वास की कमी की कहानी, यशायाह अध्याय 36 से 39, और हिजकिय्याह का परमेश्वर पर अंतिम भरोसा, इस तथ्य के बावजूद कि उसने भी गलतियाँ कीं और अक्सर खुद को सैन्य गठबंधन में लाने की कोशिश की। हिजकिय्याह, अपने पिता के विपरीत, अंततः परमेश्वर पर भरोसा करता है। यशायाह वह भविष्यवक्ता था जिसने उसे सलाह दी और जिसने अंततः संकट के इस समय में उसे सलाह दी।

हिजकिय्याह के विश्वास के कारण, प्रभु यशायाह के माध्यम से उससे कहते हैं, अशूर इस शहर को नहीं लेंगे। वे यरूशलेम पर कब्ज़ा नहीं करेंगे। मैं ऐसा नहीं होने दूँगा।

वे शहर में एक भी तीर नहीं चलाएंगे। कहानी यह है कि आधी रात को सेना का दूत बाहर निकलता है और असीरियन सेना को नष्ट कर देता है और उसका कत्लेआम कर देता है। फिर से, बिना खुद का बचाव किए या शहर की रक्षा किए बिना।

सन्हेरीब अपने घोड़े पर सवार होकर अपने वतन वापस चला जाता है और अंततः, कई वर्षों बाद, अपने परमेश्वर के मंदिर में अपने ही बेटों द्वारा उसकी हत्या कर दी जाती है। इसलिए, परमेश्वर

अपने लोगों की रक्षा करने और उन्हें बचाने में सक्षम था। उसने ऐसा हिजकिय्याह के विश्वास के कारण किया।

आलोचनात्मक विद्वान अक्सर प्रभु के दूत द्वारा असीरियन सेना को नष्ट करने की इस कहानी को देखेंगे और वे इसे केवल पौराणिक कथा के रूप में देखेंगे। लेकिन यहाँ जो कुछ भी हुआ, हम इस तथ्य को जानते हैं। सन्हेरीब ने यरूशलेम शहर पर कब्ज़ा नहीं किया और हिजकिय्याह के विश्वास के कारण, यरूशलेम शहर को बचा लिया गया।

इसलिए, हम इसे देखते हैं और कहते हैं, वाह, यशायाह ने यहूदा राष्ट्र की रक्षा करने और उसे उत्तरी राज्य पर आए विनाश और न्याय से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यशायाह ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यशायाह, एक भविष्यवक्ता के रूप में, एक अंदरूनी व्यक्ति था जिसकी शाही परिवार तक पहुँच थी।

परंपरा हमें बताती है कि वह दाऊद के घराने से भी संबंधित था। इसलिए, वह एक अंदरूनी व्यक्ति है। जब हिजकिय्याह को आध्यात्मिक सलाह की आवश्यकता होती है, तो यशायाह वह व्यक्ति होता है जिससे वह संपर्क करने वाला होता है।

दूसरी ओर, भविष्यवक्ता मीका, जो इस समय के दौरान सेवा कर रहा है, वह एक बाहरी व्यक्ति का प्रतीक है। महल में राजा को सलाह देने के लिए आमंत्रित किए जाने के बजाय, मैं कल्पना करता हूँ कि मीका यरूशलेम की सड़कों पर अपने अधिकांश संदेशों का प्रचार कर रहा है। वह मोरेशेथ गत का एक देहाती उपदेशक है।

उसका शाही परिवार से वैसा संबंध नहीं है जैसा यशायाह का था। हालाँकि, यहाँ एक दिलचस्प बात है। अगली सदी में, जब यहूदा के लोग और यिर्मयाह खुद इतिहास पर नज़र डालेंगे कि क्या हुआ और क्यों यरूशलेम और यहूदा को उत्तरी राज्य के विपरीत परमेश्वर के न्याय से बचा लिया गया, तो वे मुख्य रूप से यशायाह की सेवकाई और हिजकिय्याह को दी गई सलाह पर ध्यान केंद्रित नहीं करेंगे।

वे मीका के उपदेश और मीका के उपदेश का राजा हिजकिय्याह पर पड़ने वाले आध्यात्मिक प्रभाव के बारे में बात करने जा रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि हम यिर्मयाह अध्याय 26 में इसे देखें। याद रखें, मीका इस अथक संदेश का प्रचार कर रहा था कि यरूशलेम पर आक्रमण किया जाएगा; इसे मलबे में बदल दिया जाएगा।

यहाँ तक कि मंदिर का पहाड़ भी परमेश्वर के न्याय के पूरा होने के बाद मलबे के ढेर से ज़्यादा कुछ नहीं रह जाएगा। चूँकि अशूर की सेना ने शहर को घेर लिया था, इसलिए यह समझना मुश्किल नहीं था कि मीका किस बारे में उपदेश दे रहा था और मीका किस बारे में बात कर रहा था। इस तथ्य के बावजूद कि मीका एक बाहरी व्यक्ति था और इस तथ्य के बावजूद कि हमारे पास कोई ऐतिहासिक रिकॉर्ड नहीं है कि उसे कभी महल में आमंत्रित किया गया था या उसका कभी हिजकिय्याह से कोई सीधा संपर्क था, जब भविष्यवक्ता यिर्मयाह और उसके बाद की सदी में यहूदा के लोग पीछे मुड़कर देखेंगे कि परमेश्वर ने इस समय यहूदा को विनाश और निर्वासन से क्यों बचाया, तो वे हिजकिय्याह के उपदेश को याद करेंगे।

अध्याय 26 में, यिर्मयाह मंदिर में जाता है, अपने मंदिर के उपदेश का प्रचार करता है, लोगों को चेतावनी देता है, और कहता है, देखो, परमेश्वर यरूशलेम को नष्ट करने वाला है। यह मत सोचो कि मंदिर तुम्हारी रक्षा करने वाला है। याद करो कि उसने शीलो में क्या किया और कैसे उसने उस शहर को नष्ट कर दिया जो वहाँ उसका पवित्र स्थान था।

यदि आप अपने तरीके नहीं बदलते हैं तो परमेश्वर आपके साथ भी ऐसा ही करेगा। इसके परिणामस्वरूप, लोग इस संदेश को सुनने वाले पुजारियों, नेताओं, भविष्यवक्ताओं से मांग करेंगे, और वे मांग करेंगे कि यिर्मयाह को मौत की सज़ा दी जाए। और यह केवल यह विचार नहीं है कि यिर्मयाह का संदेश उनके लिए अलोकप्रिय है।

समस्या का एक हिस्सा यह है कि वे यिर्मयाह को एक झूठे भविष्यद्वक्ता के रूप में देखते हैं क्योंकि ईश्वर का कोई भी सच्चा भविष्यद्वक्ता यह कैसे नहीं कह सकता कि प्रभु यरूशलेम में रहते थे और वे अपने शहर की रक्षा करेंगे? और उन्होंने 701 में जो हुआ उस पर भी गौर किया होगा जब ईश्वर ने यरूशलेम को अशूरियों से बचाया था और कहा था, देखो, ईश्वर अपने शहर को बचाता है और उसकी रक्षा करता है। यदि आप हमसे मंदिर के संभावित विनाश के बारे में बात कर रहे हैं, तो आप निश्चित रूप से एक झूठे भविष्यद्वक्ता हैं, और आप मृत्यु के पात्र हैं। यिर्मयाह कहता है, देखो, तुम मेरे साथ जो चाहो कर सकते हो, लेकिन बस इतना याद रखो कि यदि तुम मुझे मार देते हो, तो मैंने तुम्हें केवल वही बताया है जो ईश्वर ने मुझे तुमसे कहने के लिए कहा है, और यदि तुम मुझे मार देते हो, तो तुम अपने ऊपर निर्दोष लोगों का खून बहाओगे।

बहस और चर्चा और चल रही कार्यवाही के दौरान, कुछ लोग खड़े होते हैं जो देश के नेता हैं, और अध्याय 26 की आयत 16 में कहा गया है, तब अधिकारियों और सभी लोगों ने पुजारियों और भविष्यद्वक्ताओं से कहा, यह आदमी मौत की सजा के लायक नहीं है क्योंकि उसने हमारे भगवान के नाम पर हमसे बात की है। अरे, वे पुष्टि करते हैं, हम इस आदमी को मौत की सजा नहीं दे सकते। उसने हमें भगवान का वचन बताया है।

वह ईश्वर का सच्चा प्रवक्ता है। और अपना पक्ष रखने और अपनी दलील को साबित करने के लिए, वे जिस नबी को याद करते हैं, वह नबी मीका है। और फिर यह कहा गया है, देश के कुछ बुजुर्ग उठे और सभी एकत्रित लोगों से कहा, मोरेशेत के मीका ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह के दिनों में भविष्यवाणी की, और यहूदा के सभी लोगों से कहा, सेनाओं का यहोवा इस प्रकार कहता है, सिथ्योन को खेत की तरह जोता जाएगा, यरूशलेम खंडहरों का ढेर बन जाएगा, और भवन का पहाड़ जंगल की ऊंचाई बन जाएगा।

अब, अगर मैं अभी आपसे एक प्रश्नोत्तरी लूँ और पूछूँ कि यह संदर्भ कहाँ से है, तो उम्मीद है कि आपको याद होगा। यह मीका, अध्याय 3, श्लोक 12 है। तो यह एक संदेश है।

और योना की तरह ही, यह भी एक तरह से पूर्णतया बिना शर्त न्याय का संदेश है। योना ने नीनवे से कहा, 40 दिन में नीनवे को उलट दिया जाएगा। लेकिन याद रखें, लोगों ने पश्चाताप किया और परमेश्वर ने दया दिखाई।

तो, यह न्याय का एक तरह का पूर्ण बिना शर्त वाला संदेश है। मीका यह नहीं कहता कि देखो, सिथ्योन को खेत की तरह जोता जाएगा और मंदिर की पहाड़ी मलबे के ढेर में तब्दील हो जाएगी, जब तक कि तुम पश्चाताप न करो और परमेश्वर के साथ सब कुछ ठीक न कर लो। लेकिन फिर से, इस्राएल और यहूदा में भविष्यवाणी का एक हिस्सा यह एहसास था कि जब भी कोई भविष्यवक्ता न्याय के इन पूर्ण कथनों को कहता है, तो हमेशा संभावना होती है कि परमेश्वर नरम पड़ जाएगा और अपना मन बदल लेगा।

और यही मीका की सेवकाई के साथ होता है। तो, ये बुजुर्ग आगे बढ़ते हैं, और वे आगे बढ़ते हैं, और वे कहते हैं, ठीक है, अब यह मीका का संदेश था। अब आइए हिजकिय्याह की प्रतिक्रिया के बारे में सोचें।

क्या यहूदा के राजा हिजकिय्याह और यहूदा के सभी लोगों ने उसे मौत के घाट उतार दिया? क्या उसने प्रभु का भय नहीं माना और परमेश्वर से अनुग्रह की याचना नहीं की और क्या प्रभु ने उनके विरुद्ध घोषित की गई विपत्ति से मन नहीं फिराया? लेकिन हम अपने ऊपर बड़ी विपत्ति लाने वाले हैं। इसलिए, वे कहते हैं, अरे, चलो वापस चलते हैं। आइए याद करें कि मीका ने यह संदेश सुनाया था, और हिजकिय्याह ने भविष्यवक्ता की बात सुनी, और उसने पश्चाताप किया; वह परमेश्वर के साथ सही हो गया।

और इसलिए, बहुत ही वास्तविक अर्थ में, यह मीका का उपदेश था, साथ ही यशायाह का उपदेश भी था, जिसने आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में उत्तरी राज्य पर आए विनाश और निर्वासन से यहूदा को बचाने में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी। इसलिए, हमें छोटे भविष्यवक्ता शब्द के उपयोग में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। अगर हम इस शब्द का उपयोग यह सोचने के लिए करते हैं कि, कुछ मायनों में, ये भविष्यवक्ता यशायाह, यहजकेल और यिर्मयाह जैसे प्रमुख भविष्यवक्ताओं से कमतर हैं।

यहाँ एक स्पष्ट उदाहरण है जहाँ परमेश्वर की नज़र में, एक की सेवकाई उतनी ही महत्वपूर्ण और सार्थक थी जितनी कि दूसरे की सेवकाई। और मुझे लगता है कि यह एक बहुत बड़ा प्रोत्साहन है। यह इस तथ्य का एक बड़ा उदाहरण है कि परमेश्वर इन भविष्यवक्ताओं को सभी प्रकार की विभिन्न स्थितियों और परिस्थितियों और पृष्ठभूमियों और वातावरणों से ऊपर उठाता है।

और परमेश्वर उन्हें महान तरीकों से इस्तेमाल कर सकता है, चाहे वे कहीं से भी आएँ। यशायाह एक अंदरूनी व्यक्ति है जिसकी राजा और महल तक पहुँच है और हम उसे वहाँ बातचीत करते हुए देखते हैं। हम इसे मीका के साथ ज़रूरी तौर पर नहीं देखते हैं, लेकिन उन दोनों का इस्तेमाल परमेश्वर द्वारा किया जाता है।

और मुझे लगता है कि जब हम कभी-कभी मंत्रालय को देखते हैं, तो हम अपनी संस्कृति में, इंगील दुनिया में लोगों को देखते हैं, वे महत्वपूर्ण पादरी हैं, वे बड़े-बड़े चर्चों के पादरी हैं, वे किताबें लिखते हैं, वे ऐसे लोग हैं जिनसे मीडिया द्वारा सलाह ली जाती है, उन्होंने परमेश्वर के लिए महान कार्य किए हैं, और परमेश्वर ने अक्सर उनके मंत्रालयों को बहुत महत्वपूर्ण तरीकों से आशीर्वाद दिया है। लेकिन एक बात जो हमें ध्यान में रखनी है वह यह है कि परमेश्वर के

स्कोरकार्ड के संदर्भ में, कभी-कभी वे लोग जिन्होंने संस्कृति या दुनिया पर वास्तविक प्रभाव डाला है, वे हमेशा वे लोग नहीं हो सकते हैं जिन्हें हम पहचानते हैं या जिन्हें हम सबसे आगे देखते हैं। ऐसे वफादार पादरी और मिशनरी और शिष्य और ऐसे लोग हो सकते हैं जो कॉलेज परिसरों में सेवा करते हैं और छात्रों तक पहुँचते हैं या ऐसे लोग जो दुनिया के उन हिस्सों में चर्च स्थापित करते हैं जिनके बारे में हमने कभी नहीं सुना है।

वे लोग राज्य में उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, जितनी कि वे लोग जो सबसे आगे हैं, और हम मीडिया या उनके बड़े चर्चों के माध्यम से जानते हैं कि परमेश्वर का स्कोरकार्ड हमारे जैसा नहीं है। इसलिए, हमारे पास भविष्यवक्ता मीका का मंत्रालय है और मीका ने लोगों को आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी दी थी जो यहूदा के राष्ट्र को बचाने में एक महत्वपूर्ण कारक था। अब, जब हम पुस्तक को देखने और पुस्तक को फिर से पढ़ने की तैयारी करते हैं, इस पुस्तक की संरचना को समझने की कोशिश करते हैं और यह कैसे एक साथ रखी गई है, तो आधुनिक पाठकों के रूप में हमारे लिए ऐसा करना हमेशा आसान नहीं होता है।

इसलिए, मैं मीका की संरचना और इस पुस्तक को जिस तरह से प्रस्तुत किया गया है, उसके बारे में बात करना चाहूँगा। जैसा कि हमने होशे की पुस्तक में देखा और जैसा कि हम कई भविष्यवाणियों की पुस्तकों में देखते हैं, न्याय और उद्धार के भविष्यवक्ता के संदेशों के बीच का परिवर्तन एक महत्वपूर्ण बात है जो हमें पुस्तक को जिस तरह से प्रस्तुत किया गया है उसे समझने में मदद करता है। अब, इस पर बहुत चर्चा हुई है।

मीका की पुस्तक के बारे में बहुत से अलग-अलग मत हैं। मैं यहाँ एक बहुत ही सरल राय देने की कोशिश करने जा रहा हूँ, जो मुझे लगता है कि पुस्तक को समझने में मेरी मदद करेगी। हमारे पास पुस्तक के तीन प्रमुख खंड हैं, जिनकी पहचान इन खंडों की शुरुआत में दिए गए एक अनिवार्य निर्देश से होती है कि प्रभु का वचन सुनें।

उदाहरण के लिए, अध्याय 1, श्लोक 2 में, हे लोगों, तुम सब सुनो, पृथ्वी पर और उसमें जो कुछ है उस पर ध्यान दो। इसलिए, मीका ने पूरे संसार को संदेश सुनने के लिए बुलाया। अध्याय 3, श्लोक 1 में, मैंने कहा, हे याकूब के प्रमुखों और इस्राएल के घराने के शासकों, सुनो।

और फिर अध्याय 6 में, वहाँ है कि प्रभु क्या कहते हैं, सुनो, उठो और पहाड़ों के सामने अपना मामला पेश करो। तो, भविष्यवाणी के वचन को सुनने के लिए यह आह्वान, संदेश के महत्व पर जोर देता है, एक संरचनात्मक उपकरण है जो मुझे लगता है कि हमें इन तीन प्रमुख खंडों को देखने में मदद करता है। जिस संरचना को मैं यहाँ प्रकट और विकसित कर रहा हूँ, वह वही है जो लेस्ली एलन ने अपनी पुस्तक न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री ऑन मीका में प्रदान की है।

यदि आप इसे देखना चाहते हैं तो आप इसे और अधिक विस्तार से देख सकते हैं। जब हम इन तीन खंडों की तुलना करते हैं तो क्या होता है कि प्रत्येक खंड में न्याय का संदेश होता है जिसके बाद उद्धार का वचन आता है। और इसलिए, हमें अध्याय 1 और 2, 3 से 5, और 6 से 7 में यह मिलता है। अब, पहले खंड में, हमारे पास न्याय का काफी विस्तृत संदेश है।

और फिर हमारे पास यह बहुत ही संक्षिप्त संदेश है कि परमेश्वर इसे उलटने जा रहा है, अध्याय 2, श्लोक 12 से 13. न्याय के समाप्त होने के बाद क्या होने जा रहा है, यहाँ बताया गया है। हे याकूब, मैं निश्चय ही तुम सभी को इकट्ठा करूँगा, और इस्राएल के बचे हुए लोगों को भी इकट्ठा करूँगा।

मैं उन्हें भेड़ों की तरह एक बाड़े में, चरागाह में झुंड की तरह, शोर मचाने वाले लोगों की भीड़ की तरह इकट्ठा करूँगा। जो दरार खोलता है वह उनके आगे बढ़ता है। वे फाटक को तोड़कर उसमें से निकल जाते हैं।

उनका राजा उनके आगे से गुज़रता है, प्रभु उनके मुखिया हैं। और इसलिए वह लोगों को फिर से इकट्ठा करने जा रहा है। वह उन्हें भेड़ों के झुंड की तरह निर्वासन के बाद वापस लाने जा रहा है।

वे संख्या में बहुत बड़े होंगे, और उनका एक राजा होगा। परमेश्वर न्याय करने जा रहा है, लेकिन परमेश्वर उस न्याय को पलट देगा। पुस्तक के तीसरे भाग में, हमारे पास मूल रूप से वही बात है।

हमारे पास न्याय का एक बहुत लंबा और विस्तृत संदेश है जो अध्याय 6, पद 1 से अध्याय 7, पद 7 तक जाता है। हालाँकि, उस भाग के अंत में, हमारे पास उद्धार का एक समापन वादा है। मीका अध्याय 7, पद 7 में कहता है, "लेकिन मैं यहोवा की ओर देखूँगा। मैं अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर की बाट जोहूँगा, और मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा।"

हे मेरे शत्रु, मुझ पर आनन्दित मत हो। जब मैं गिरूँगा, तो उठूँगा। जब मैं अंधकार में बैठूँगा, तो प्रभु मेरे लिए प्रकाश बनेगा।

और इसलिए, प्रभु अंततः अपने लोगों को न्यायोचित ठहराने और उन्हें मुक्ति दिलाने जा रहे हैं। प्रभु यहूदा की वर्तमान स्थिति को उलटने जा रहे हैं। यहूदा और इस्राएल को अपमानित होने के बजाय, इस्राएल को पराजित करने और उसे अपने अधीन करने वाले शत्रुओं को अपमानित किया जाएगा।

तो, पुस्तक के पहले भाग, अध्याय 1 और 2 में न्याय का एक लंबा संदेश और उद्धार का एक छोटा संदेश है। पुस्तक के तीसरे भाग में भी यही बात है: न्याय का एक लंबा संदेश और उद्धार का एक छोटा संदेश। फिर पुस्तक के मध्य में, फिर से, हमें न्याय और उद्धार के बीच यह परिवर्तन देखने को मिलता है।

हालाँकि, पुस्तक के मध्य में, जो मुझे लगता है कि वह स्थान है जहाँ, संरचना के संदर्भ में, हमें वास्तव में अपना ध्यान उस पर केंद्रित करना चाहिए जो हमारे पास है, वहाँ हमारे पास न्याय का एक संक्षिप्त संदेश है। और फिर हमारे पास उद्धार का एक लंबा और विस्तृत वादा है। दो सबसे महत्वपूर्ण और सबसे महत्वपूर्ण वादे, न केवल मीका की पुस्तक में, बल्कि पुराने नियम के सभी भविष्यवाणियों के साहित्य में, यहाँ पाए जाते हैं क्योंकि हमारे पास एक शक्तिशाली, सुंदर चित्र है, भविष्य की महिमा, शांति और न्याय का एक उद्धार चित्रण जो सिय्योन में प्रबल होगा, अध्याय 4 पद 1 से 6। हमारे पास मीका के अध्याय 5, पद 2 में एक महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण मसीहाई भविष्यवाणी भी है। और इसलिए मीका अध्याय 4 में इस अंश में, यह अंतिम दिनों में घटित होगा

कि प्रभु के घर का पर्वत पहाड़ों में सबसे ऊँचा स्थापित किया जाएगा, और यह पहाड़ियों से ऊपर उठाया जाएगा, और लोग इसके पास आएंगे।

और बहुत सी जातियाँ आकर कहेंगी, आओ, हम यहोवा के पर्वत पर और याकूब के परमेश्वर के भवन में चलें। और इसलिए, भविष्य में, राष्ट्र सिथ्योन पर आक्रमण करने और उस पर आक्रमण करने और नगर को नष्ट करने के लिए आने के बजाय, वे आएंगे, और वे यहोवा के मार्गों को सीखने, उसकी आराधना करने और उसका सम्मान करने के लिए आएंगे। और परमेश्वर राष्ट्रों पर शासन करने जा रहा है।

वे अपनी तलवारों को हल के फाल में बदलने जा रहे हैं। और यह एक ऐसा राज्य होगा जहाँ अविश्वसनीय शांति होगी। यह वर्तमान में जो चल रहा है उसका उलटा है।

एक राजा भी होगा जो इस्राएल और पूरे इस्राएल, उत्तरी और दक्षिणी राज्यों पर शासन करेगा जो फिर से एक हो गए हैं। और अध्याय 5, श्लोक 2 में, हे बेथलेहम एप्राता, तुम जो यहूदा के कुलों में बहुत छोटे हो, तुम में से मेरे लिए एक व्यक्ति निकलेगा जो इस्राएल में शासक होगा, जिसका आना पुराने दिनों से, प्राचीन काल से है। और वह वही होगा जो लोगों का नेतृत्व करेगा।

वह वही होगा जो शांति का यह साम्राज्य लाएगा। इसलिए, पुस्तक के मध्य भाग में, वर्तमान स्थिति और निर्वासन और उनके विरुद्ध परमेश्वर द्वारा लाए जाने वाले न्याय के बारे में एक लंबा संदेश होने के बजाय, उद्धार का एक विस्तृत वादा है। और इस पुस्तक के मध्य भाग में, और यहाँ ठीक बीच में, यही वह है जिस पर हमारा ध्यान केन्द्रित होना चाहिए।

कि परमेश्वर अंततः इन परिस्थितियों और इन स्थितियों को उलटने जा रहा है। अब, जब हम न्याय और उद्धार के इन तीन खंडों को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि जैसे-जैसे भविष्यवक्ता न्याय से उद्धार की ओर बढ़ता है, इन सभी चीजों में से एक चीज यह होती है कि उद्धार केवल भविष्य के आशीर्वाद और उद्धार का एक सामान्य वादा नहीं है, बल्कि भविष्य का उद्धार सीधे न्याय की उन स्थितियों को उलटने जा रहा है जिनका वर्णन खंड के पिछले भाग में किया गया है। इसलिए, अध्याय 1, पद 1 से अध्याय 2, पद 10 तक, असीरियन आक्रमण होने जा रहा है।

एक आक्रमण होने वाला है। यह सामरिया पर होने वाला है। यह यरूशलेम पर होने वाला है।

लेकिन अध्याय 2, श्लोक 12 से 13 में, परमेश्वर निर्वासितों को वापस लाने जा रहा है, और वे असंख्य शोरगुल करने वाले झुंड की तरह होंगे जो प्रभु के सामने से गुज़रने वाले हैं। यह सीधे निर्वासन की स्थितियों को उलट देता है। पुस्तक के मध्य भाग में इस विस्तारित भविष्यवाणी और इस्राएल के भविष्य की आशा के विस्तारित अंश में भी यही बात है।

अध्याय 3, श्लोक 12 में, सिथ्योन को खेत की तरह जोता जाएगा, यरूशलेम खंडहरों का ढेर बन जाएगा, और भवन का पहाड़ जंगल की ऊँचाई बन जाएगा। प्रभु का पहाड़ गिराया जाएगा। यह सिर्फ जंगल की ऊँचाई बनकर रह जाएगा।

यह एक बंजर, परित्यक्त स्थान होने जा रहा है। अध्याय 4, श्लोक 1 और 2 में इसका सीधा उलटा वर्णन है। प्रभु के भवन का पर्वत पृथ्वी पर सबसे ऊँचा पर्वत बन जाएगा। मुझे नहीं पता कि हम यहाँ किसी शाब्दिक बात की बात कर रहे हैं जहाँ माउंट सियोन माउंट एवरेस्ट जैसा बनने जा रहा है, लेकिन यह यरूशलेम की महिमा और महत्व और महत्व का वर्णन करने का एक काव्यात्मक तरीका है क्योंकि यह परमेश्वर के राज्य का केंद्र होगा।

अध्याय 3, श्लोक 12 में यरूशलेम को नष्ट करना और मंदिर पर्वत को नीचे गिराना, अध्याय 4 में मंदिर पर्वत को ऊपर उठाने से सीधे उलट दिया गया है। अध्याय 3 में भ्रष्ट नेतृत्व जो इस न्याय को लाता है, उसे एक नए दाऊद द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा जो दाऊद के राजवंश को पुनर्स्थापित करेगा। परमेश्वर केवल अपने लोगों को बचाता नहीं है, बल्कि वह सीधे न्याय और निर्वासन की स्थितियों को उलट देता है। और फिर, जब हम पुस्तक के तीसरे भाग में जाते हैं, तो फिर से, परमेश्वर द्वारा लाया गया उद्धार सीधे उस न्याय को उलट देता है और पलट देता है जिसका लोग अनुभव करने जा रहे हैं।

अध्याय 7 के पहले भाग में, भविष्यवक्ता कहता है: हाय मुझ पर, क्योंकि मैं ऐसा हो गया हूँ जैसे गर्मियों के फल इकट्ठे किए गए हों, जैसे अंगूर तोड़े गए हों। खाने के लिए कोई गुच्छा नहीं है, कोई पहली पकी अंजीर नहीं है जिसे मैं चाहता हूँ। पृथ्वी से धर्मी लोग नष्ट हो गए हैं, और मनुष्यों में कोई भी सीधा नहीं है, और वे सभी खून में लीन हैं और हिंसा और अन्याय करते हैं।

भविष्यवक्ता यरूशलेम और यहूदा की वर्तमान स्थिति पर शोक व्यक्त करता है। मुझे दुःख है क्योंकि यरूशलेम एक अंगूर के गुच्छे की तरह हो गया है जिस पर कोई फल नहीं है। यरूशलेम अंततः पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा।

इसके अलावा, देश में कोई भी धर्मी लोग नहीं हैं। अध्याय 7 के पहले भाग में शोक का स्वर है। हालाँकि, अध्याय 8 में, जैसे ही संदेश खुशी और आनन्द और उत्सव की ओर मुड़ना शुरू होता है, हे मेरे शत्रु, मुझ पर आनन्दित मत हो। इसलिए, अध्याय 7 के पहले भाग में शोक अध्याय 7 के दूसरे भाग में आनन्द में बदल जाता है। इसलिए, यहाँ एक सुसंगत पैटर्न है, न केवल जहाँ ये तीन खंड न्याय से उद्धार की ओर बढ़ते हैं, बल्कि ऐसे विशिष्ट तरीके हैं जिनसे उद्धार के वादे सीधे निर्वासन की स्थितियों को उलट देते हैं और पलट देते हैं।

इस संरचना के बारे में एक अंतिम बात बताना ज़रूरी है। उद्धार के इन सभी वादों में, एक ऐसा शब्द है जो पाया जाता है वह है अवशेष। अध्याय 2, पद 12 में, हमारे पास उस अवशेष के बारे में एक कथन है जिसे परमेश्वर अपने लोगों के लिए प्रदान करने और छुड़ाने जा रहा है।

हे याकूब, मैं निश्चय ही तुम सबको इकट्ठा करूँगा, मैं इस्राएल के बचे हुए लोगों को इकट्ठा करूँगा। बचे हुए शब्द का सीधा अर्थ है बचे हुए लोग, बचे हुए लोग। बचा हुआ शब्द आशा प्रदान करता है क्योंकि इसका अर्थ है कि परमेश्वर के लोग इस न्याय में पूरी तरह से नष्ट नहीं होने वाले हैं।

अध्याय 4, श्लोक 7 में यह कहा गया है, "और जो लंगड़े हैं, जो इस निर्वासन के कारण अपंग और घायल और चोटिल और नुकसानग्रस्त हो गए हैं, मैं उन्हें लंगड़ा बना दूँगा, मैं उन्हें बचा हुआ बना

दूँगा, और जिन्होंने त्याग दिया है उन्हें एक मजबूत राष्ट्र बना दूँगा, और प्रभु अब से लेकर हमेशा के लिए सिन्धोन पर्वत पर उन पर शासन करेंगे। और इसलिए, वे निर्वासन के कारण लंगड़े और अपंग और घायल और कमज़ोर हो गए हैं। वे अंततः एक अवशेष और एक महान राष्ट्र बनने जा रहे हैं क्योंकि प्रभु उन्हें बचाता है।

अध्याय 5, श्लोक 7 और 8, तब याकूब के बचे हुए लोग बहुत सी जातियों के बीच में होंगे, यहोवा की ओर से ओस की तरह, घास पर वर्षा की तरह, जो किसी मनुष्य के लिए देर नहीं करती, न ही मनुष्य के बच्चों के लिए प्रतीक्षा करती है। और याकूब के बचे हुए लोग जातियों के बीच, बहुत सी जातियों के बीच में होंगे, जंगल के पशुओं के बीच सिंह की तरह, भेड़ों के झुंड के बीच जवान सिंह की तरह। और इसलिए, यह कमज़ोर राष्ट्र जो अपने दुश्मनों द्वारा तबाह हो गया है, जिसे अशूरियों के अंगूठे के नीचे रखा गया है, और जो युद्ध की सभी भयावहताओं से गुज़रता है, अंततः वे एक बार फिर से एक महान और शक्तिशाली राष्ट्र बन जाएंगे क्योंकि परमेश्वर इस्राएल के लोगों से अपनी वाचा के वादों को पूरा करता है।

अंत में, पुस्तक के अंतिम भाग में, हमें अवशेष शब्द का अंतिम प्रयोग मिलता है। वहाँ लिखा है, उस दिन वे मिस्र के नगरों से और मिस्र से नदी तक, समुद्र से समुद्र तक, पहाड़ से पहाड़ तक तुम्हारे पास आएँगे, और यहोवा आशीष देगा, और यहोवा इस्राएल के बचे हुए लोगों का निर्माण करेगा। और इसलिए, उन बचे हुए लोगों पर ध्यान केंद्रित किया गया है जो इससे बाहर निकलेंगे। और वास्तव में, वह स्थान जहाँ हमें अवशेष शब्द का अंतिम प्रयोग मिलता है, वह अध्याय सात, श्लोक 18 में है।

तेरे जैसा कौन परमेश्वर है, जो अधर्म को क्षमा करता है, और अपनी विरासत के बचे हुएों के लिए अपराध को अनदेखा करता है? अब, जब मीका ने बचे हुएों के बारे में बात की और जब मीका ने उनके बचे हुएों के बारे में बात की, तो इसने किसी भी तरह से उसके संदेश की गंभीरता या गंभीरता को कम नहीं किया, बल्कि इसने हमसे वादा किया, और इसने परमेश्वर के लोगों से वादा किया कि न्याय के इस समय के बाद, उद्धार का समय होगा। भविष्यवक्ताओं का वाचा संदेश यह था कि परमेश्वर उनके विरुद्ध न्याय करने जा रहा था और यह न्याय सैन्य पराजय और निर्वासन का रूप लेगा जब कोई पश्चाताप नहीं होगा। लेकिन मीका की पुस्तक की संरचना, ये तीन खंड जहाँ न्याय और उद्धार है और विशिष्ट वादा कि परमेश्वर एक बचे हुएों को बहाल करेगा, हमें इस तथ्य की याद दिलाता है कि परमेश्वर अपने लोगों के प्रति वफ़ादार था।

परमेश्वर अपने वादों को पूरा करेगा और एक दिन परमेश्वर उन्हें पुनः स्थापित करेगा और उन्हें फिर से एक महान राष्ट्र बनाएगा। जब हम मीका की पुस्तक का अध्ययन करेंगे, तो हम देखेंगे कि परमेश्वर का न्याय कैसे आता है, जब वह निर्वासन का न्याय लाता है, असीरियन आक्रमण, लेकिन साथ ही वह अविश्वसनीय आशा और वादा भी जो प्रभु लोगों को उनके प्रति अपनी वाचा की वफ़ादारी के आधार पर देता है।

यह डॉ. गैरी येट्स की पुस्तक 12 पर अपनी व्याख्यान श्रृंखला में है। यह व्याख्यान 19, मीका परिचय और संरचना है।